

मंगल भवन अमंगल हारी  
मंगल भवन अमंगल हारी  
दरवहु सुदसरथ अचर बहारी  
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम - २

हो, होइहै वही जो राम रचिाखा  
को करे तरफ़ बढ़ाए साखा

हो, धीरज धरम मतिर अरु नारी  
आपद काल परखयि चारी

हो, जेहकिे जेहपिर सत्य सनेहू  
सो तेहि मिलिय न कछु सन्देहू

हो, जाकी रही भावना जैसी  
रघु मूरतदिखी तनि तैसी

रघुकुल रीत सदा चली आई  
प्राण जाए पर वचन न जाई  
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम

हो, हरिअनन्त हरकिथा अनन्ता  
कहहि सुनहि बहुवधि सब संता  
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम